कोयला मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री एस० बी० नयमेगौड़ा) : (क) दिनांक 28-12-91 से कोयले की विभिन्न ग्रेडों की कीमतों में प्रभावी वृद्धि, औद्योगिक लागत एवं मूल्य ब्यूरो द्वारा सिफारिश किए गए वृद्धि मामले पर आधारित हैं ।

(ख) कोल इंडिया लि० को औसतन 73 रुपये प्रति टन की वृद्धि किए जाने की अनुमति दी गई है और इस वृद्धि के परिणामस्वरूप कोल इंडिया लि० के मामले में इस संबंध में 28-12-1991 से 31-3-1992 की अवधि के दौरान 480 करोड़ रुपये की अधिक राशि प्राप्त होने का अनुमान है ।

(ग) कोल इंडिया लि० द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार वर्ष 1990-91 में कोल इंडिया लि० की 6 कोयला उत्पादन करने वाली सहायक कंपनियों द्वारा कार्यचालित 397 कोयला खानों में से 300 खानें घाटे में चल रही हैं, जबकि 97 खानें लाभ कमा रही थी । इस आंकड़े के प्रयोजन के लिए कोयला उत्पादन करने वाली यूनिटें "खानों" के रूप में ऐसी खानें हैं, जो कि लागत संबंधी सूचना दिए जाने के लिए लागत केन्द्र के रूप में समझी जाती हैं । अतः इस स्थान पर "खान" के लिए प्रस्तुत किए गए आंकड़े अन्य प्रयोजनों के लिए प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के अनुरूप न समझे जाएं ।

(घ) घाटे को कम किए जाने के संबंध में उठाए गए कदमों में निम्नलिखित कदम शामिल हैं :—

(1) श्रमशक्ति आयोजन में सुधार, जिसमें फालतू कामगारों की पुनः तैनाती और प्राकृतिक रूप में फिजूलखर्ची के कारण रिक्त पदों के एवज में नए कर्मचारियों की भर्ती पर रोक लगाया जाना शामिल है ।

(2) श्रमशक्ति में वृद्धि पर स्वैच्छिक सेवा-निवृत्ति योजना के जरिए नियंत्रण ।

(3) "आल मैन-आल-जाब" की संकल्पना को प्रायोगिक आधार पर प्रयोग में लाया जा रहा है ।

(4) पर्याप्त रूप में वर्कशाप-स्पोर्ट, स्पेयर पुर्जों की व्यवस्था में सुधार और उपकरणों की समय पर विस्थापन करके उपकरणों की उपयोगिता तथा उपलब्धता में सुधार ।

(5) भूमिगत खानों पर विशेष जोर देकर उत्पादन तथा उत्पादकता में वृद्धि ।

(6) कार्यचालन की दक्षता में सुधार लाए जाने के लिए कई सुधार पद्धतियां तथा प्रबंधनीय उपाय अंगीकृत किए गए हैं ।

ईंट भट्टा उद्योग को कोयले की कम सप्लाई

1218. **श्री शंकर दयाल सिंह** : क्या कोयला मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 13 फरवरी, 1992 के "नवभारत टाइम्स" में प्रकाशित इस आशय के समाचार की ओर दिलाया गया है कि कोयले की कमी के कारण ईंट भट्टा उद्योग बन्द होने के कगार पर पहुंच गया है;

(ख) गत छः महीनों के दौरान इस उद्योग को कितने रेक कोयला प्रतिमाह उपलब्ध कराया गया है; और

(ग) इस संबंध में सरकार द्वारा क्या उपाय किए गए हैं ?

कोयला मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री एस० बी० नयमेगौड़ा) : (क) जी, हां ।

(ख) पिछले 6 महीनों की अवधि के दौरान रेल द्वारा कोल इंडिया लि०

द्वारा ईंट भट्ठा उद्योग को प्रेषित किए गए कोयले का ब्यौरा नीचे दिया गया है :—

अगस्त, 1991	11 रैक
सितम्बर, 1991	2 रैक
अक्तूबर, 1991	8 रैक
नवम्बर, 1991	63 रैक
दिसम्बर, 1991	55 रैक
जनवरी, 1992	30 रैक

(ग) ईंट भट्ठा उद्योग को काफी मात्रा में कोयला उपलब्ध किए जाने के लिए कोल इंडिया लि० ने पश्चिम बंगाल को छोड़कर, विभिन्न राज्यों में स्थित प्रायोजित यूनिटों को प्रतिमाह लगभग 9.7 लाख टन कोयले की आपूर्ति किए जाने की व्यवस्था की है । पश्चिम बंगाल की ईंट भट्ठा यूनिटों को ईस्टर्न कोलफील्ड्स लि० की कोलियरियों से तथा राज्य में प्रचालित कोल इंडिया लि० के स्टाकयार्डों से आपूर्ति की जाती है, जो कि इन उपभोक्ताओं के आवंटन पर और संबद्ध स्टाकयार्डों तथा पिटहैडों पर कोयले की उपलब्धता पर निर्भर करती है । कोयले की आपूर्ति सभी उपभोक्ताओं को, जिसमें ईंट भट्ठा उद्योग शामिल है, सड़क द्वारा "प्रथम आओ—प्रथम पाओ" के आधार पर एक समय में 1000 टन तक "उदारीकृत बिक्री योजना" के अंतर्गत भी आपूर्ति की जाती है ।

Fires in Jharia coalfields

1219. SHRI DHULESHWAR MEENA: Will the Minister of COAL be pleased to state:

(a) since when fires have been raging in the Jharia coalfields in Bihar;

(b) the areas covered by these fires and the estimated quantity of coal damaged due to these fires so far;

(c) what are the causes of these fires;

(d) whether it is a fact that the World Bank and the United Nations Development Fund (UNDP) have expressed their willingness to assist in the efforts to put out the fires in collaboration with the Government agencies of the United States;

(e) if so, Government's reaction in this regard; and

(f) whether any action plan has been worked out to control the fire, if so, the details thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COAL (SHRI S. B. NYAMAGOUDA): (a) and (b) There were 70 fires in Jharia Coalfields covering an area of 17.32 Sq. Km. since a long time before the nationalisation of Coking Coal mines. The first fire in this coalfield was reported in the year 1916. It is difficult to make precise estimate of loss of coal reserves caused by fires. However, the coal company have estimated that coal reserves to an extent of about 37 million tonnes might have been damaged in these fires.

(c) Most of the fires of Jharia Coalfield have originated from spontaneous combustion of coal in shallow underground mines or on the surface due to unscientific mining practices in the past resulting broken coal being left in the mines which caught fire.

(d) and (e) The size of the problem being very large the Government have been exploiting the possibilities of obtaining financial as well as technical assistance from the foreign countries to deal with these fires. One project for dealing with